Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

शोध-समीक्षा अंक

• वर्ष-16 • अंक 37 • अक्टूबर - दिसंबर 2023 • पूर्णांक 75 • मूल्य 100 रुपए 37

• संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

21. विकास बिश्नोई की कहानियों में बदलते वर्तमान परिदृश्य- डॉ. रश्मि शर्मा 109-112
22. प्रेमचन्द के आलोचकों का सांस्कृतिक अधिष्ठान - मिन्नु जोसेफ 113-117
23. भारतीयता के उपासक : प्रेमचंद- राघवेन्द्र सिंह 118-123
24. बेरोजगार युवा मानस की व्यथा-कथा और अखिलेश का कथा-साहित्य- प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी,(शोध-निर्देशक),डॉ. योगेन्द्र सिंह 124-128
25. 'धर्म और अधर्म' नाटक - पौराणिक परिप्रेक्ष्य में- डॉ. शर्लिन 129-132
26. दलित विमर्श के आइने में हिन्दी नाटक और रंगमंच - विभीषण कुमार 133-138
27. 'मुआवजे' नाटक में चित्रित सामाजिक यथार्थ' - मनोजकुमार सुभाष शर्मा 139-144
28. भक्ति की पृष्ठभूमि पर स्त्री की आत्माभिव्यक्ति - डॉ. उमा मीणा 145-151
29. मीराबाई की भक्ति भावना का स्वरूप - छविन्दर कुमार 152-156
30. भारतेन्दु युगीन कवि : दत्त द्विजेन्द्र के काव्य में राष्ट्रीय चेतना - डॉ मिथिलेश शर्मा 157-163
31. समय से साक्षात्कार की कविताएँ - प्रोमिला 164-171
32. संत रविदास : आस्था और विश्वास के कवि - प्रो. चंद्रकांत सिंह 172-177
33. प्रकृति, पारिस्थितिकी और समकालीन हिंदी कविता- ध्रुव कुमार 178-183
34. मराठी संतों का हिंदी काव्य- डॉ रूपा चारी 184-190
35. विचलन प्रतिमान के निकष पर ज्ञानेंद्रपति की कविताएँ - प्रो. सदानंद भोसले, (शोध-निर्देशक) रेवनसिद्ध काशिनाथ चव्हाण, (शोध - छात्र) 191-196
36. मनुष्यता का अकाल और जसिंता की कविता - अपर्णा ए. 197-201
37. विराट व्यक्तित्व के साहित्यकार : देवेश ठाकुर - डॉ प्रवीण चंद्र बिष्ट 202-211
38. रामदरश मिश्र :व्यक्तित्व एवं रचना-संसार- सौरभ मिश्र 212-216
39. अट्टालिका से देखिए झोपड़ी का दैन्य- अभिषेक गुप्ता 217-221
40. संस्मरण में पशु-जीवन : मनुष्यता की पहचान - डॉ. मधुबाला शुक्ल 222-226
41. साहित्य का स्त्रीवादी चेहरा - डॉ. सुनीता कुमारी 227-233
42. महिला सबलीकरण की दिशा में महात्मा गांधी चिंतन - प्रा. रेणुका चव्हाण 234-239
43. भूमंडलीकरण के खिलाफ एक प्रतिरोध के रूप में आदिवासी संस्कृति- डॉ. अनीश के. एन. 240-243
44. कच्छ के छोटे रण में अगरिया समुदाय की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन- डॉ. हसमुख पंचाल 244-248
45. सहयोग और सहकारी संघवाद - डॉ सुमन यादव 249-253

संत रविदास : आस्था और विश्वास के कवि

प्रो. चंद्रकांत सिंह

भक्तिकाल संक्रमण का काल है, इस काल में शास्त्र और लोक, वेद और जन में द्वंद्व दिखता है। इस दौर में सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि से भारत पतन की ओर अग्रसर हो रहा था। मुस्लिम आक्रमण के साथ इस दौर में जो दुर्व्यवस्था दिखाई देती है, उसमें आम आदमी के लिए कहीं कोई जगह नहीं है। सत्ता के दमन और अत्याचार से आम आदमी इस तरह परेशान था कि उसकी स्थिति दयनीय जान पड़ रही थी,संत रविदास ऐसे सामंतीय समय में हुए। उन्होंने अपने व्यक्तित्व से समाज में रोशनी पैदा करने का काम किया। उनकी कविताओं में जहाँ एक ओर तत्कालीन शासनकी प्रतिछाया दिखती है, वहीं उनकी कविताओं में सामान्य आदमी के लिए चिंता और तड़प भी दिखती है। अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने जन-जागृति पैदा करने की कोशिश की। उनकी कविताओं को व्यापक जनजागरण की कविता कहा जा सकता है, किन्तु इस जागृति में रविदास सर्वप्रथम स्वयं को जागृत करते हैं और अपूर्वविश्वास के साथ खुद का निर्माण भी करते हैं। उनकी कविता के संबंध में ब्रह्मजीत गौतम का कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है। संत रविदास जी के युगप्रवर्तक व्यक्तित्व पर बात करते हुए वह कहते हैं कि- 'कवि और साहित्यकार कालजयी होते हैं। वे युग प्रवर्तक भी कहे जाते हैं। कवि केवल अपने युग के लिए नहीं लिखता, भविष्य के लिए भी प्रेरणा देने का कार्य करता है। यदि किसी कवि में अपने युग- जीवन के लिए ईमानदार संवेदनशीलता है, यदि वह सच्चे अर्थों में मानव -जीवन का कवि है, तो वह युग-युग तक मानव जाति के लिए प्रेरक और प्रासंगिक बन जाता है। संत रैदास ऐसे ही युग कवि थे, जो काल की सीमाओं को लांघ कर आज भी समाज और देश के लिए प्रासंगिक बने हुए हैं।'[1]

एक ऐसे समय में जब हिन्दू समाज मुस्लिमों के विरोध का सामना कर रहा था, वहीं इस समाज में बहुत सारे ऐसे लोग भी थे, जो हिन्दू होकर भी हिन्दुओं में नफरत के बीज बो रहे थे। रैदास इन विभाजक शक्तियों के प्रति सचेष्ट थे, यही कारण है कि उनकी कविताओं में सामाजिक वर्चस्व को पाटने का अविरल प्रयास दिखाई देता है। एक संत के रूप में रविदास जी ने सदैव विनम्रता का परिचय दिया। उनकी कविता को सदाशयी कविता कहा जा सकता है, जिसमें सभी के लिए जगह है। वह भाई-भाई में राग का संचार कर उन्हें एकजुट करना चाहते हैं। सभी विचारों से परे उनकी कविता को कर्मशील हृदय की कविता कहा जा सकता है, जहाँ मात्र एक ही अनुगूँज है और वह है दायित्वों के निर्वहन की। आचार्य पृथ्वी सिंह आजाद ने रैदास जी के व्यक्तित्व पर बात करते हुए सही कहा है कि- 'सतगुरु रविदास की वाणी में कटुता नहीं, अपितु मधुरता और विनम्रता है। उन्होंने न तो किसी पर कठोर आक्षेप किए और न व्यंग्य। वे कबीर के समसामयिक तो थे, परंतु उन्होंने कबीर की भाषा का प्रयोग नहीं किया।वे मधुर स्वभाव के सच्चे, वैष्णव, अहिंसक, निराभिमानी परम संत थे, जिन्होंने अनेक कठिनाइयों को सहकर भी भगवत- भक्ति का रास्ता नहीं छोड़ा और परिश्रम से अपनी रोजी-रोटी कमाई, साधु-संतों की सेवा की औरऐसे समाज की स्थापना के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे,